

# 20 दिन में गुरुमुखी (पंजाबी)

First



पंजाबी और गुरमुखी पर्यायवाची शब्द हैं। पंजाबी भाषा है और गुरमुखी लिपि, जैसे हिंदी भाषा है और देवनागरी लिपि। पंजाबी सीखने का अर्थ है गुरमुखी लिपि का और पंजाबी भाषा का ज्ञान। भाषा वैज्ञानिकों के मतानुसार गुरमुखी लिपि (SCRIPT) के संशोधन तथा रचना का श्रेय दूसरे गुरु, श्री गुरु अंगद (1583-1606) को जाता है। पांचवें गुरु, श्री गुरु अर्जन देव ने इस लिपि और भाषा में कुछ और सुधार किए। क्योंकि सिख गुरुओं ने इस लिपि की रचना की, इसे गुरमुखी के नाम से जाना जाता है। गुरु अर्जन देव ने ही 1604 में सिखों के पवित्र ग्रंथ की बाणी को गुरमुखी लिपि में तैयार करवाया था। 5894 'शबदों' (hymns) के इस ग्रंथ में उनकी और उनसे पहले हुए गुरुओं की रचनाओं के साथ 937 'शबद' भारत के अन्य समकालीन भक्तों, संतों एवं प्रबुद्ध जनों द्वारा रचित हैं। यह रचनाकार समाज के हर वर्ग और भारत के अन्य प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

समस्त मानव-जगत की मूलभूत आध्यात्मिक एकता को स्थापित करने वाला यह पवित्र ग्रंथ एक वैश्विक व सार्वभौमिक महत्व रखता है। इस ग्रंथ का दूसरा सम्पादन नौवें गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर द्वारा अपनी रचनाएँ डालने के समय हुआ। इतिहासकारों व भाषा वैज्ञानिकों का मत है कि 1430 पत्रों पर लिखे इस पवित्र ग्रंथ में प्राकृत, संस्कृत, बंगाली, पहाड़ी, मराठी सहित 22 भारतीय भाषाओं व बोलियों के साथ अरबी तथा फ़ारसी का भी प्रयोग हुआ है। सारी रचनाएँ 31 शास्त्रीय रागों में निबद्ध हैं और इन रागों में गाई जा सकती हैं। इस पवित्र ग्रंथ का अनुवाद अंग्रेज़ी, हिंदी, फ्रेंच, स्पैनिश, जर्मन व अन्य कुछ भाषाओं में हो चुका है जो 'नेट' पर उपलब्ध हैं।

गुरबाणी को पढ़ना व सुनना और गुरबाणी कीर्तन सुनना एक सिख की दिनचर्या का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। पंजाब से बाहर अन्य प्रांतों में रहने वाले सिख परिवारों के बच्चे अक्सर पंजाबी सीखने से वंचित रह जाते हैं। बड़े होकर वे उस सहज आनंद से भी वंचित रह जाते हैं जो गुरबाणी को पढ़, सुन, गा और समझ कर मन में उपजता है। यह 'सहज' ही जीवन के उतार-चढ़ाव में आपका संबल भी बनता है।



श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी व वर्तमान सतगुरु उदै सिंह जी ने अपने प्रवचनों में हर सिख बच्चे व बड़े को गुरमुखी पढ़ने व पंजाबी भाषा सीखने का निर्देश दिया है। इसी उद्देश्य से, सतगुरु जी की प्रेरणा से मैंने इस छोटी पुस्तक को तैयार किया है। गुरमुखी सीखने के पारम्परिक तरीके से यह कुछ अलग है। पाँचवीं क्लास से ऊपर तक हिंदी पढ़े हुए सभी बच्चों व बड़ों के लिए यह कारगर वैज्ञानिक विधि है। थोड़े से परिश्रम और लगन से अधिकतर बच्चे या बड़े पंजाबी पढ़ना व लिखना आरंभ कर पाएंगे। यदि घर में कोई पंजाबी पढ़ा हुआ सदस्य है तो उस की थोड़ी सी सहायता से यह काम और भी आसान हो जाएगा। नियमानुसार एक दिन में एक ही पृष्ठ पढ़ें व अभ्यास करें। हर पांचवें दिन अपनी परीक्षा लें। बार बार लिखना और बोलना ही इस पांचवें दिन अपना टैस्ट लें। स्वयं प्रयास करने पर आप धीरे-धीरे गुरमुखी या पंजाबी पढ़ना व लिखना सीख पाएंगे। वे सभी वयस्क जो गुरमुखी जानते हैं पर व्यावसायिक शिक्षक नहीं हैं, इस पुस्तक की सहायता से अपने बच्चे या अन्य किसी को गुरमुखी पढ़ा सकते हैं।

डा० जय इंद्र पाल सिंह

मन्डी (हि०प्र०)

<https://archive.org/details/namdhari>

गुरमुखी लिपि का मूल आधार अन्य भारतीय लिपियों जैसे बंगाली, उड़िया, तिबेतन व देवनागरी की तरह 2000 वर्ष पूर्व प्रचलित प्राकृत भाषा व ब्राम्ही लिपि से हुआ माना गया है। एक मतानुसार पंजाब में पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में प्रचलित अर्धनागरी या देवनागरी तथा सिद्ध-मात्रिका (जो कश्मीर की शारदा लिपि पर आधारित है), के संगम से बनी। आधुनिक गुरमुखी लिपि में 38 व्यंजन (अक्षर), 10 स्वर (लगां-मात्रा), नासिका-ध्वनि के 2 चिन्ह (बिंदी व टिप्पी) तथा दोहरे अक्षर के लिए 1 चिन्ह (अद्धक) हैं। इसके अतिरिक्त 4 संयुक्त, 'र' 'ह' 'ट' 'व' तथा आधे 'य' व्यंजनों के संयुक्त अक्षर हैं।

# (दिन-1)

(आज के अक्षर/मात्राएं)

ल ा

ल ा

लिखने का एक तरीका



(आ की मात्रा की लंबाई कम है)

अभ्यास

(बीस बार बोल कर लिखें)

लाल लाल लाल



## दिन-2

(आज के अक्षर/मात्राएं)

ख अ े ि

ਖ ਅ ੇ ਿ

लिखने का एक तरीका



### अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें )

खेल लिख लख खाल खिल लेख लिखिआ अलख लिआ  
खिलिआ खेलिआ लेखा लखा आख आखिआ लखिआ  
आला लिआ

ध्यान दें:

पंजाबी में छोटी इ की मात्रा (ि) का उच्चारण शब्द के आरम्भ में 'इ' और मध्य तथा अंत में उस अक्षर का आधा या कम हो जाता है, जैसे 'लिख' का पंजाबी उच्चारण है 'लिख' व 'खिलिआ' का उच्चारण है 'खिलेआ' व 'लिखि' का उच्चारण है 'लिख'।

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ ा ि ੇ

# दिन-3

(आज के अक्षर/मात्राएं)

क त ह ए इ ओ  
(ओ की मात्रा)

क त ह ए इ ओ

लिखने का एक तरीका

क त ह ए इ ओ

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

तेल केला हल कालख ताकत हलका किल हिक

धेत इखलाक आलस लेक ऐके खालस लेहा

ताल धाक इक गेहे ऐकता

ध्यान दें: पंजाबी में ओ की मात्रा में अक्षर में ा नहीं लगता

हिंदी के इ, ई, ए, पंजाबी के एक ही अक्षर में मात्रा लगा कर लिखे जाते हैं : इ ई ऐ

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख ग क त ह ए इ ा ि

े े



# दिन-4

(आज के अक्षर/मात्राएं)

ब न ग र ु

घ ण ग र ु

लिखने का एक तरीका

ब न ग र ु

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

अखबार गुलाब खराब इतबार घुरा गीतापेठ

अनबन अहित खबर बुधर बेतल गारक धुराक

गुनाह अहित बरतन किनारा हनेरा खिलारा गोलक

ध्यान दें: शब्द के अंतिम अक्षर पर 'उ' (॰) की मात्रा का उच्चारण नहीं होता। 'बिनु' का उच्चारण है 'बिन' है 'बिनु' नहीं।

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ए ऐ  
ब न ग र ा ि े ो ु

## दिन-5

### गुरमुखी में लिखें

(उत्तर अंतिम पृष्ठ पर)

1. लेख 2. इखलाक 3. लोक 4. कालख
5. खेत 6. एकता 7. होए 8. किला
9. लोहा 10. लखिआ 11. आला 12. केस
13. खाक 14. खालिक 15. काला
16. गुलाब 17. निराला 18. कुरबान
19. किरन 20. इनकार 21. गोल 22. रेल
23. हुनर 24. इतबार 25. कारखाना
26. कोलतार 27. होनहार 28. रुतबा
29. हरिआली 30. हुलारा

(गलतियां मिलने पर पिछले पृष्ठों को आज फिर से पढ़ें।)



दिन-6

(आज के अक्षर/मात्राएं)

द व ई ी

द व ए ी

लिखने का एक तरीका

द व ए ी

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

दहलीज गरीब गिनती देवता खाली बेलदार वारा  
बदली वेरवा खरीद गुरदेव इरादा दानवीर  
बैदिला गुनाहगार बेकदरी रेल उल्लवार दीरखा  
हवन

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ए ऐ  
ब न ग र द व ए ी ा ि े ो ु ी

ਦਿਨ-7

(आज के अक्षर/मात्राएं)

म स उ ू

म स उ ू

लिखने का एक तरीका



अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें )

ਮਦਦ ਸਲਾਹਕਾਰ ਉਦਾਸ ਸੁਮਾਰਗ ਮਾਲੀ ਸੁਨੇਹਾ ਮੇਰ  
ਸਰੀਰ ਮੁਲਾਕਾਤ ਦੂਰ ਵਿਰਾਸਤ ਇਮਲੀ ਦੇਹਰਾਦੂਨ  
ਆਵਾਗਮਨ ਮੋਰਨੀ ਅਮੀਰ ਉਸਤਾਦ ਮੁਸਲਮਾਨ  
ਉਸਾਰੀ ਅਰਦਾਸ ਆਲੂ

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ऐ ई  
ब न ग र द व णी म स उ ा ि ੇ ੋ ੁ ੀ ੂ



## ਦਿਨ-8

(आज के अक्षर/मात्राएं)

ज भ ट आ ओ

ज भ ट आ ओ

लिखने का एक तरीका

# ज भ ट आ ओ

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें )

ਉਲਾਹਨਾ ਓਏ ਭਵਾਨੀ ਟੇਕਨ ਇਜਲਾਸ ਟਾਕਰਾ ਜੇਰ  
ਅਲਿਪਤ ਭਾਈ ਬਜਟ ਟੇਪੀ ਓਪਰਾ ਭਤੀਜਾ  
ਜਰਾਸੀਮ ਆਓ ਗਰਾਗੀ ਓਟ ਉਮਰ ਈਸਾ ਜੂਨ  
ਉਸਤਾਦ ਗੁਨਾਹਗਾਰ

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ए इ ब न ग  
र द व णी म स उ ओ ज भ ट आ ा ि ੇ ੋ ੁ ੀ ੂ

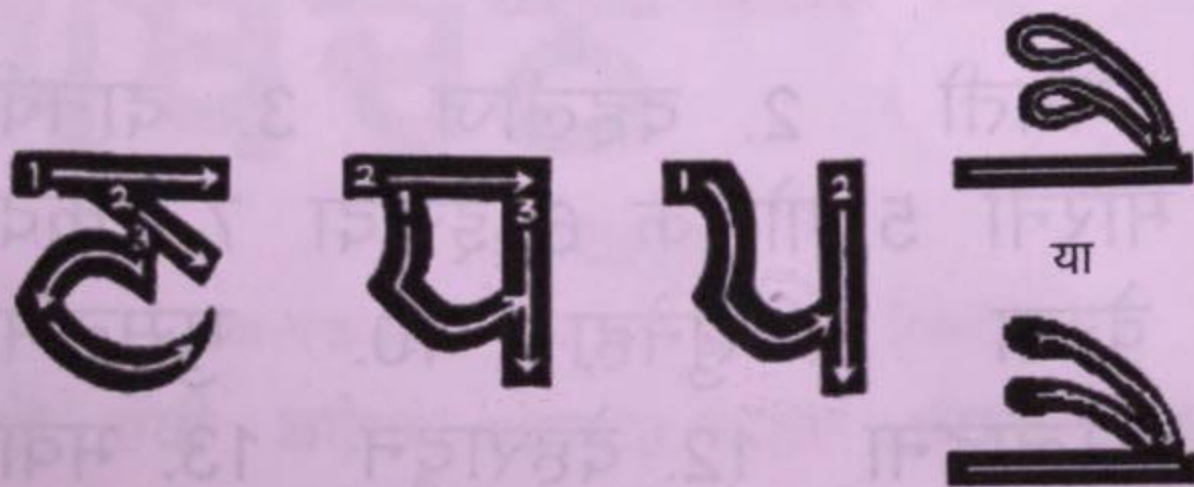
## दिन-9

(आज के अक्षर/मात्राएं)

ण ध प ै

ल य प ै

लिखने का एक तरीका



अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें )

हमला परंपकार परम बली पैली कलक मालक  
पाली परती मल्ला नैसलमेर पीरज पपारे लूल  
पलेट वीर नारायण सिरोपा उधार मुबारक मालल  
पेधा मलके डैल कीरतन

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ए ऐ इ ऋ ॠ  
द व णी म स उ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ  
ै



## दिन-10

गुरमुखी में लिखें  
(उत्तर अंतिम पृष्ठ पर):

1. गिनती    2. दहलीज    3. दानवीर
4. मोरनी    5. गोलक    6. इरादा    7. बेकदरी
8. वेरवा    9. सुनेहा    10. मुसलमान
11. उलाहना    12. देहरादून    13. भवानी
14. जरासीम    15. जोर    16. भतीजा
17. ओपरा    18. पाणी    19. आलस    20. धनी
21. धीरज    22. गुनाहगार    23. जीभ
24. माई    25. राणी    26. लकीर    27. लिखारी
28. भारत    29. इनसान    30. भैणी साहिब

दिन-11

(आज के अक्षर)

घ थ च ठ ौ ँ ं

ਘ ਥ ਚ ਠ ੌ ੰ ੂ

लिखने का एक तरीका

ਘ ਥ ਚ ਠ ੌ ੰ

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

ਠਹਿਰੇ ਚੌਥੀ ਬਬੇਰਾ ਘਨਘੋਰ ਚਸਕਾ ਚੌਧਰੀ ਬੈਠਕ

ਘਰਾਟ ਮੇਖਾਂ ਠੇਕਰ ਘਿਓ ਬਚਪਨ ਪੰਥ ਇਕਾਂਤ

ਬਿੰਧਾ ਘਬਰਾਹਟ ਗੰਭੀਰ ਕੈਂਚੀ ਚਾਨਣ ਥਾਲੀ ਸਰਸੋਂ

ध्यान दें:

जब उच्चारण गले से होता है तो अक्षर ऐसे लिखे जाते हैं : भां कां

किछिं डादरें में सरसों दसवें देखां

जब उच्चारण तालू और जीभ के बीच से होता है तो अक्षर ऐसे लिखे

जाते हैं: गंगा चंगा पंजवीं सिंघा कंघी कंगन बिंधा संगत

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ए ऐ इ ष न ग

ਰ ਦ ਵ ਈ ਮ ਸ ਉ ਓ ਜ ਭ ਟ ਆ ਣ ਧ ਪ ਘ ਥ ਚ ਠ ਾ ਿ

ੇ ੋ ੁ ੀ ੂ ੈ ੌ ੰ ੂ



# दिन-12

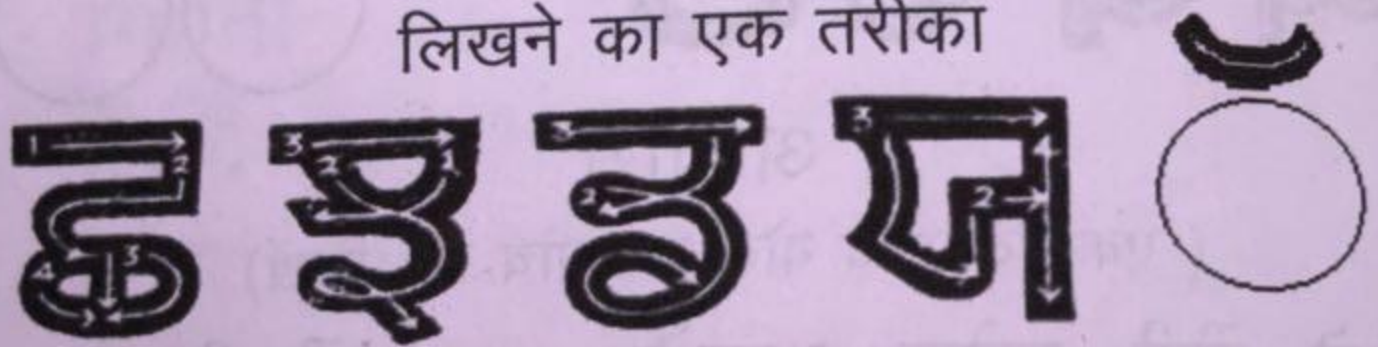
(आज के अक्षर)

छ झ ड य

ढ ङ ङ ञ ॐ

आज की मात्रा है ॐ । गुरमुखी में दोहरा अक्षर जैसे त्त क्क फ्फ प्प लिखने के लिए उस अक्षर से पहले अक्षर पर यह मात्रा (अब्धक) डाली जाती है। 'पक्का' लिखने का तरीका है 'पँका'

लिखने का एक तरीका



अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

ढूरी डरायीवर ईँढा दयावान डेरी जातरी  
झलक पँका जकीन झरना ढपायी झंजर  
मिठायी उलझन लाडला गँडा झंडा डमरु गँडी  
संगत

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ऐ ई ब न ग र  
द व णी म स उ ँ ज ड ट आ ए य प य ष च ठ ढ झ ड ङ  
ा ि ੇ ੋ ੁ ੀ ੁ ੈ ੌ ੰ ੱ ॐ



# दिन-13

(आज के अक्षर)

ढ फ ड ढ ज

च छ ज्ञ झ ञ

(पुरातन ग्रंथों में 'ड' तथा 'ज' का उपयोग हुआ है लेकिन आधुनिक लेखन में इन अक्षरों का उपयोग लगभग समाप्त होता जा रहा है)

लिखने का एक तरीका

च छ ज्ञ झ ञ

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

चाल छाल पड़ताल फैसला वंदना छेर झाड़ू

लड़ाई सुवे पड़कन हंग जॉनी तेज़ना बिआनी कौड़ा

छीठ हौजी थोड़ी झलक छांख डंडल सड़क

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ए ऐ इ ऋ ॠ

र द व ण म स ण ण ज ड ट आ ए ऋ ॠ ऋ ॠ ऋ ॠ

य च छ ज्ञ झ ञ ा ि े ै ॄ ी ू ै ॊ ो ौ ्



# दिन-14

(आज के अक्षर)

क़ त्र प्र स्व ढ

रू त्रू पू सू त्रु

लिखने का एक तरीका

रू त्रू पू सू त्रु

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

रूता त्रिभुवन मूर मृामी त्रिकाल वरू सैमाल  
त्रुता कड़ाही पत्रे पारधूम रूथ त्रुता त्रिमल यू  
पूतीक त्रिजा जात्रा पूसाद त्रुादीवर

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ए ऐ ष न ग र  
द व णी म स उ ँ ज ड ट आ ण य प ष च ठ ढ ण ड ज  
ढ ढ ड ङ व रू त्रू पू षू सू त्रु ा ि े ो ु ी ू ै ौ  
ं ० ०

ध्यान दें: 'स' 'क' 'त' 'ग' 'द' 'छ' व्यंजनों के नीचे 'व' डालने पर  
'स्व' 'क्व' 'त्व' 'ग्व' 'द्व' 'छ्व' अक्षर बनते हैं तथा 'स' 'क', 'प', 'त'  
'ड' 'ब' के नीचे र डालने पर 'स्त्र', 'क्र', 'प्र', त्र तथा 'ब्र' बन जाता है।  
गुरमुखी में अन्य आधे अक्षरों का प्रयोग लगभग न के बराबर होता है।

## दिन-15

गुरमुखी में लिखें  
(उत्तर अंतिम पृष्ठ पर):

1. परोपकार 2. सिरोंपा 3. बथेरा 4. घबराहट
5. डमरू 6. मिठाई 7. ढाल 8. हड्डी
9. इच्छा 10. फ़ैसला 11. उलझन 12. डंडल
13. छतरी 14. पड़ताल 15. चौधरी 16. कैची
17. स्वैमाण 18. रासलीला 19. त्रेता 20.
- कड़ाही 21. प्रसाद 22. पढ़ो 23. गोताखोर
24. क्रोध 25. थाणेदार 26. धू 27. ड्राइवर
28. स्वर 29. परछावां 30. शमा



दिन-16

(आज के अक्षर)

श ख ग ज फ़

स़ ष़ ग़ ज़ ढ़

लिखने का एक तरीका

स़ ष़ ग़ ज़ ढ़

अभ्यास

( एक-एक शब्द बोल कर पांच बार लिखें)

स़रीढ़ ग़ज़ल ढ़रीद ज़खीरा स़ंध ख़ुदग़रज़  
ज़ोरदार स़्री ढ़ेल काग़ज़ अंगरेज़ ढ़ाँदिया स़मा  
ज़ाज़ा ढ़ासला ज़मींदोज़ रंगरेज़ स़ौर गुज़ारा  
ढ़साना

आज तक के अक्षर व मात्राएं: ल ख अ क त ह ऐ ई ब न ग र  
द व णी म स़ उ ँ ज़ ट आ ल य प ञ़ ष़ च ठ ढ़ झ ड़ ङ  
ढ़ ढ़ड़ड़ व़ ऱ रू पू सू ऱ स़ ष़ ग़ ज़ ढ़ ा ि े ै ू  
ी ू ै ू ० ० ० ०

# ਦਿਨ-17

(ਸਮੀ ਸਾਤ੍ਰਾਏਂ)

ਅ ਆ ਙ ਙੰ ਤ ਭ ਏ ਏ ਔ ਅੰ

ਅਭਿਆਸ

(ਇਕ ਵਾਰੀ ਇਹ ਲਿਖੋ)

ਸ਼ਵਰ/ਲਗਾਂ/ਮਾਤ੍ਰਾ:

ਅ ਆ ਇ ਈ ਉ ਊ ਏ ਐ ਓ ਔ ਅੰ/ਆਂ

ਕ ਕਾ ਕਿ ਕੀ ਕੁ ਕੂ ਕੇ ਕੈ ਕੌ ਕੰ/ਕਾਂ

ਕੰਜਨ/ਪੰਜਾਬੀ ਅੱਖਰ:

ਕ ਖ ਗ ਘ ਙ

ਚ ਛ ਜ ਝ ਞ

ਟ ਠ ਡ ਢ ਠ

ਤ ਥ ਦ ਧ ਨ

ਪ ਫ ਬ ਭ ਮ

ਯ ਰ ਲ ਵ ਸ

ਅੱਧੇ ਅੱਖਰ ('ਰ' 'ਵ' 'ਹ'):

ਕ਼ ਕ੍ ਪ੍ ਕ੍ ਸ੍ ਤ੍

ਵਿਸ਼ੇਸ਼:

ੴ

(ਉਚਾਰਣ) ਇਕ ਓਅੰਕਾਰ



## ਦਿਨ-18

### ਪਫੇਂ ਔਰ ਲਿਖੇਂ

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ  
ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ। ਜਪੁ। ਆਦਿ ਸਚੁ  
ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ। ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ। ਸੋਚੈ  
ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ। ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵਈ  
ਜੇ ਲਾਇ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ। ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ  
ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ। ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ  
ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ। ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ  
ਪਾਲਿ। ਹੁਕਮ ਰਜਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ।

(ਪ੍ਰਥਮ 6 तथा 8 पर 'ि' व 'ु' के उच्चारण के नियम याद रखें)



# ਅਭਿਆਸ (ਪੜ੍ਹੇ ਤੇ ਸਮਝੋ)

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ  
ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ॥ ਜਪੁ ॥ ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ  
॥੧॥ ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥ ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਲਾਇ ਰਹਾ  
ਲਿਵ ਤਾਰ ॥ ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ  
ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥ ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ  
ਪਾਲਿ ॥ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ॥੧॥

ਅਰਥ: ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਇੱਕ ਹੈ, ਜਿਸ ਦਾ ਨਾਮ ਹੋਂਦ ਵਾਲਾ ਹੈ ਜੋ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਦਾ  
ਰਚਨਹਾਰ ਹੈ, ਜੋ ਸਭ ਵਿਚ ਵਿਆਪਕ ਹੈ, ਭੈ ਤੋਂ ਰਹਿਤ ਹੈ, ਵੈਰ-ਰਹਿਤ ਹੈ, ਜਿਸ  
ਦਾ ਸਰੂਪ ਕਾਲ ਤੋਂ ਪਰੇ ਹੈ, (ਭਾਵ, ਜਿਸ ਦਾ ਸਰੀਰ ਨਾਸ-ਰਹਿਤ ਹੈ), ਜੋ ਜੂਨਾਂ  
ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ, ਜਿਸ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਆਪਣੇ ਆਪ ਤੋਂ ਹੋਇਆ ਹੈ ਅਤੇ ਜੋ  
ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਨਾਲ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਹੇ ਨਾਨਕ! ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਮੁੱਢ ਤੋਂ ਹੋਂਦ  
ਵਾਲਾ ਹੈ, ਜੁਗਾਂ ਦੇ ਮੁੱਢ ਤੋਂ ਮੌਜੂਦ ਹੈ। ਇਸ ਵੇਲੇ ਭੀ ਮੌਜੂਦ ਹੈ ਤੇ ਅਗਾਂਹ ਨੂੰ ਭੀ  
ਹੋਂਦ ਵਾਲਾ ਰਹੇਗਾ। ਜੇ ਮੈਂ ਲੱਖ ਵਾਰੀ (ਭੀ) (ਇਸ਼ਨਾਨ ਆਦਿਕ ਨਾਲ ਸਰੀਰ  
ਦੀ) ਸੁੱਚ ਰੱਖਾਂ, (ਤਾਂ ਭੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ) ਸੁੱਚ ਰੱਖਣ ਨਾਲ (ਮਨ ਦੀ) ਸੁੱਚ ਨਹੀਂ ਰਹਿ  
ਸਕਦੀ। ਜੇ ਮੈਂ (ਸਰੀਰ ਦੀ) ਇਕ ਤਾਰ ਸਮਾਧੀ ਲਾਈ ਰੱਖਾਂ, (ਤਾਂ ਭੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ)  
ਚੁੱਪ ਕਰ ਰਹਿਣ ਨਾਲ ਮਨ ਦੀ ਸ਼ਾਂਤੀ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ। ਜੇ ਮੈਂ ਸਾਰੇ ਭਵਣਾਂ ਦੇ  
ਪਦਾਰਥਾਂ ਦੇ ਢੇਰ (ਭੀ) ਸਾਂਭ ਲਵਾਂ, ਤਾਂ ਭੀ ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਦੇ ਅਧੀਨ ਰਿਹਾ ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ  
ਦੂਰ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ। ਜੇ (ਮੇਰੇ ਵਿਚ) ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਤੇ ਲੱਖਾਂ ਚਤੁਰਾਈਆਂ ਹੋਵਣ, (ਤਾਂ  
ਭੀ ਉਹਨਾਂ ਵਿਚੋਂ) ਇਕ ਭੀ ਚਤੁਰਾਈ ਸਾਥ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦੀ। (ਤਾਂ ਫਿਰ) ਅਕਾਲ  
ਪੁਰਖ ਦਾ ਪਰਕਾਸ਼ ਹੋਣ ਲਈ ਯੋਗ ਕਿਵੇਂ ਬਣ ਸਕੀਦਾ ਹੈ (ਅਤੇ ਸਾਡੇ ਅੰਦਰ  
ਦਾ) ਕੂੜ ਦਾ ਪਰਦਾ ਕਿਵੇਂ ਟੁੱਟ ਸਕਦਾ ਹੈ? ਰਜਾ ਦੇ ਮਾਲਕ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੇ  
ਹੁਕਮ ਵਿਚ ਤੁਰਨਾ (ਇਹੀ ਇਕ ਵਿਧੀ ਹੈ)। ਹੇ ਨਾਨਕ! (ਇਹ ਵਿਧੀ) ਧੁਰ ਤੋਂ ਹੀ  
ਜਦ ਤੋਂ ਜਗਤ ਬਣਿਆ ਹੈ ਲਿਖੀ ਚਲੀ ਆ ਰਹੀ ਹੈ।



## दिन-20

गुरमुखी में लिखें

(उत्तर अंतिम पृष्ठ पर)

1. दयावान 2. छलावा 3. ईमानदार
4. प्रौहणा 5. ठेकेदार 6. आलीशान
7. भवसागर 8. पुत्री 9. चंडीगढ़ 10. बाजीगर
11. झुंड 12. डुबकी 13. ढीठ 14. प्रकोप
15. स्वागत 16. इट्ट 17. पुत्र 18. भाई
19. यकीन 20. स्वाभिमान 21. फ़रीद
22. नामकरण 23. पारब्रह्म 24. मधाणी
25. मेज़बान 26. परधान 27. छायादार
28. घुप्प 29. गुरु 30. ओजस्वी 31. तृष्णा
32. अकाल पुरख 33. निरवैर 34. चतुराईआं
35. पंडित 36. निहाल 37. अमृत 38. पवित्रता
39. विचारवान 40. सतिगुरु



उत्तर (दिन-5)

1. ਲੇਖ 2. ਇਖਲਾਕ 3. ਲੋਕ 4. ਕਾਲਖ 5. ਖੇਤ 6. ਏਕਤਾ 7. ਹੋਏ
8. ਕਿਲਾ 9. ਲੋਹਾ 10. ਲਖਿਆ 11. ਆਲਾ 12. ਕੇਸ 13. ਖਾਕ
14. ਖਾਲਿਕ 15. ਕਾਲਾ 16. ਗੁਲਾਬ 17. ਨਿਰਾਲਾ 18. ਕੁਰਬਾਨ 19.
- ਕਿਰਨ 20. ਇਨਕਾਰ 21. ਗੋਲ 22. ਰੇਲ 23. ਹੁਨਰ 24. ਇਤਬਾਰ
25. ਕਾਰਖਾਨਾ 26. ਕੋਲਤਾਰ 27. ਹੋਨਹਾਰ 28. ਰੁਤਬਾ 29. ਹਰਿਆਲੀ
30. ਹੁਲਾਰਾ

उत्तर (दिन-10)

1. ਗਿਨਤੀ 2. ਦਹਲੀਜ 13. ਦਾਨਵੀਰ 4. ਮੋਰਨੀ 5. ਗੋਲਕ
6. ਇਰਾਦਾ 7. ਬੇਕਦਰੀ 8. ਵੇਰਵਾ 9. ਸੁਨੇਹਾ 10. ਮੁਸਲਮਾਨ
11. ਉਲਾਹਨਾ 12. ਦੇਹਰਾਦੂਨ 13. ਭਵਾਨੀ 14. ਜਰਾਸੀਮ 15. ਜੋਰ
16. ਭਤੀਜਾ 17. ਓਪਰਾ 18. ਪਾਲੀ 19. ਆਲਸ 20. ਧਨੀ 21. ਪੀਰਜ
22. ਗੁਨਾਹਗਾਰ 23. ਜੀਭ 24. ਮਾਈ 25. ਰਾਲੀ 26. ਲਕੀਰ 27.
- ਲਿਖਾਰੀ 28. ਭਾਰਤ 29. ਇਨਸਾਨ 30. ਭੈਲੀ ਸਾਹਿਬ

उत्तर (दिन-15)

1. ਪਰੋਪਕਾਰ 2. ਸਿਰੋਪਾ 3. ਬਬੇਰਾ 4. ਘਬਰਾਹਟ 5. ਡਮਰੂ
6. ਮਿਠਾਈ 7. ਢਾਲ 8. ਹੱਡੀ 9. ਇੱਛਾ 10. ਫੈਸਲਾ 11. ਉਲਝਨ
12. ਡੰਡਲ 13. ਛਤਰੀ 14. ਪੜਤਾਲ 15. ਚੌਧਰੀ 16. ਕੈਂਚੀ
17. ਸੈਮਾਲ 18. ਰਾਸਲੀਲਾ 19. ਤ੍ਰੇਤਾ 20. ਕੜਾਹੀ 21. ਪ੍ਰਸਾਦ 22. ਪੜੇ
23. ਗੋਤਾਖੋਰ 24. ਕ੍ਰੋਧ 25. ਥਾਲੇਦਾਰ 26. ਧੂ 27. ਝਾਈਵਰ 28. ਸੂਰ
29. ਪਰਛਾਵਾਂ 30. ਸ਼ਮਾ

उत्तर (दिन-20)

1. ਦਯਾਵਾਨ 2. ਛਲਾਵਾ 3. ਇਮਾਨਦਾਰ 4. ਪ੍ਰੋਹਣਾ 5. ਠੇਕੇਦਾਰ
6. ਆਲੀਸ਼ਾਨ 7. ਭਵਸਾਗਰ 8. ਪੁੜੀ 9. ਚੰਡੀਗੜ 10. ਬਾਜੀਗਰ 11. ਝੁੰਡ
12. ਭੁਬਕੀ 13. ਢੀਠ 14. ਪ੍ਰਕੋਪ 15. ਸੂਰਗਤ 16. ਇੱਟ 17. ਪੁੱਠ
18. ਭਾਈ 19. ਯਕੀਨ 20. ਸ੍ਵਾਭਿਮਾਨ 21. ਫਰੀਦ 22. ਨਾਮਕਰਣ
23. ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ 24. ਮਧਾਲੀ 25. ਮੇਜ਼ਬਾਨ 26. ਪਰਧਾਨ 27. ਛਾਯਾਦਾਰ
28. ਘੁੱਪ 29. ਗੁਰੂ 30. ਓਸ਼ਸ਼ੀ 31. ਤ੍ਰਿਸ਼ਣਾ 32. ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ 33.
- ਨਿਰਵੈਰ 34. ਚਤੁਰਾਈਆਂ 35. ਪੰਡਿਤ 36. ਨਿਹਾਲ 37. ਅਮ੍ਰਿਤ 38.
- ਪਵਿਤ੍ਰਤਾ 39. ਵਿਚਾਰਵਾਨ 40. ਸਤਿਗੁਰੂ